नागार्जुन के गद्य की भाषिक संरचना एवं शिल्प विधान

डॉ0 सार्वण्य हृषिकेश्वर*

शोषितों, दलितों, खेतिहर मजदूरों, किसानों और सर्वहारों की गाथा होने के साथ–साथ नागार्जुन की रचनाएँ सामाजिक चेतना की वाहक भी हैं जो इन्हें साहस, धैर्य और उत्साह के साथ लड़ने की सलाह देती हैं। मानव जीवन के हर पक्ष समाज, संस्कृति, चेतना, भावना, आशा–आकांक्षा, शक्ति, अर्थनीति, राजनीति, इतिहास और भूगोल इत्यादि को भी उकेरने का सफल प्रयास इनकी कृतियों में नजर आता है।

जन–गण–मन के जागृत शिल्पी, धरती के पुत्र, अनबूझ को सूझ और सूझ को अबूझ में बदलने वाले नागार्जुन को यायावरी में विपुल अनुभव प्राप्त हुए जिस कारण उनकी साहित्यिक भाषा और शिल्प में विविधता दिखती है। गद्य में शिल्प की अपनी शक्ति रहती है जबकि भाषा और शब्द की अपनी ताकत है इन दोनों की शक्ति के सहारे जुझारू जनता की बातें वे अपनी रचनाओं में करते हैं। तभी तो 'नागार्जुन' के कई रूप हैं। राजनीतिक पत्रकारिता के स्तर पर क्रांतिकारी जोश उभारने वाले ओजस्वी नागार्जुन! जातीय हिन्दी कविता के नये यथार्थवादी नागार्जुन! टेसू, आलसी और बौरों की ऋतुओं के सरगम के साधक नागार्जुन! सर्वहारा वर्ग या छात्र वर्ग के अद्‌भुत आत्मीयता भरे अभिभावक नागार्जुन! इनकी रचनाएँ तो समाज की विकृतियों और असंगतियों से भरी हैं जिनकी व्याख्या के लिए कटाक्ष, कूटक्ति तेजाबी, दंश हास्य, परिहास आदि औजारों का प्रयोग करते हैं। रचना लिखते वक्त किसी विद्वान की तरह नहीं बल्कि आमजन की तरह दृष्टि रखते हैं, इसलिए कोई–कोई शब्द अल्पशिक्षित आमजन तो समझ जाता है वहीं बड़े–बड़े विद्वान नहीं समझ पाते।

उनके गद्य का शिल्प व भाषा एक जैसी ही है। उनके पात्रा जो बोलते हैं, जिन दृश्यों को देखते हैं उसे पाठक स्वयं महसूस करते हैं। सारी विभीषिकाओं, मूल्यहीनता एवं अंतर्विरोधें को वे अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। **''आधुनिक कबीर''** कहे जाने वाले रचनाकार नागार्जुन भारतीय भाषाओं में ऐसे इकलौते प्रतिनिधि हैं जो राजपथ की ओर कभी नहीं मुड़े सदैव जनपथ पर ही चलते रहे, इसके लिए उन्होंने कभी किसी की परवाह नहीं की, भाषा और शिल्प भी उन्हें बंधन में नहीं रख पाए। लोकजीवन की बोली, लय, त्योहार, गवई स्वभाव, आदत, सबको परख कर ही वे साहित्य में लाते हैं। सही अर्थों में भारतीय मिट्‌टी से बने नागार्जुन, निराला के बाद एकमात्र ऐसे रचनाकार रहे हैं जिन्होंने इतने छंदों एवं इतनी शैलियों का उपयोग किया। वे एक अद्वितीय साहित्यकार हैं जो आमजन के हृदय को स्पर्श करते हुए खुरदुरे यथार्थ तथा विषम वास्तविकता से कभी मुँह नहीं मोड़ते।

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है, जिसके सहारे भावों–विचारों, आशा–आकाँक्षाओं को व्यक्त किया जाता है। किसी भी रचनाकार की शक्ति उसकी भाषा और शैली है, नागार्जुन जन साधरण के रचनाकार हैं जिस कारण साहित्य की भाषा हिन्दी को चुनते हैं– हिन्दी, मैथिली, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले नागार्जुन ने जब भी लिखा, जो भी लिखा, सहज सरल भाषा में लिखा और आम आदमी के लिए लिखा। उनकी दृष्टि विद्वान की न होकर आमजन की है। इन्होंने कृत्रिमता और जड़ता के स्थान पर भाषा के सहज सरल प्रयोग पर अधिक बल दिया। यही कारण है कि उनकी भाषा के स्वरूप में जर्मनी गंध एवं सहजता मिलती है।

उनके गद्य की भाषा विशिष्ट है भाषा स्वयं जीवन का स्वाभाविक फल है, चूँकि जीवन उसे उत्पन्न करता है अतएव वही उसका पालन–पोषण भी करता है। किसी भी भाषा को उसे बोलने वाली जनता से अलग हटाकर स्वतंत्र और इन्द्रियातीत समझना भूल है। उनकी जड़ें जन–जन की चेतना में गहराई तक पहुँची रहती है। सत्य तो यह है कि भाषा कार्यरत जीवन और सक्रिय जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ये बातें नागार्जुन के सम्बन्ध में पूर्णतः सत्य है क्योंकि इनकी रचनाओं में उत्कृष्ट साहित्यिक भाषा के अतिरिक्त संज्ञा शब्दों, संस्कृत प्रधान शब्दों, तत्सम्, तद्‌भव, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, मैथिली, भोजपुरी, बंग्ला, नेपाली के शब्दों के साथ–साथ सामान्य बोलचाल व जनपदीय शब्दों का बाहुल्य है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इनकी भाषा सम्पदा, समृद्ध और समर्थ है जिसमें भावना की गहराई और अनुभूति की गहनता है। इनका भाषिक तेवर गाँव की खूशबू और हरे–भरे अंचल की सुगन्ध का परिचय प्रदान करता है तथा जिस पर चिंतन का गहरा रंग चढ़ा हुआ है। कहीं–कहीं दार्शनिक, आत्मदर्शी व भाव प्रवणता के कारण भाषा चिन्तन प्रधन तो हुई है लेकिन लचीली व लालित्यपूर्ण है। मैथिली, हिन्दी,

***+शिक्षक, विषय–हिन्दी अमीरचन्द बालिका उच्च विद्यालय, आरा (भोजपुर)**

संस्कृत, पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती भाषाओं का ज्ञान उनकी गतिशील सक्रियता और प्रतिबद्धता का प्रमाण है जिस कारण भाषा में बदलाव लाया गया है। 'नागार्जुन की भाषा में किताबीपन नहीं, वातावरण की गंध है, जिसमें उनके पात्र जीते–मरते, सांस लेते छोड़ते हैं। पात्रों का जीवन सीमाओं, आर्थिक विषमताओं में बीतता है उनकी भाषा उस जीवन का सही दस्तावेज है।'

शिल्पहीन शिल्प के शिल्पी नागार्जुन ने शिल्प के लिए जनवादी दृष्टिकोण अपनाया हैं जो उन्होंने समाज, परिवार परिवेश, संस्कृति व यात्राओं की विवेकमय अनुभूति से हासिल किया है। किसी रचना का विषय बाह्य प्रक्रिया तथा वस्तु आंतरिक प्रक्रिया होती है। वस्तु को अनुभव के धराती से प्राप्त करके कथाकार जिस माध्यम द्वारा प्रस्तुत करता है वह शिल्प कहलाता है। शिल्प के अंतर्गत विषयवस्तु, कथानक, पात्र (चरित्र चित्रण), वातावरण, देशकाल, उद्देश्य तथा कथावस्तु शैली आती है। नागार्जुन के कथावस्तु का आधार तत्व ग्रामांचल है वे गाँव में होने वाले बदलाव को अपने उपन्यासों व कहानियों में लाते हैं। वे कथानक आसपास की वास्तविकताओं और परिवेश से चुनते हैं इसी कारण उनके कथानक सजीव हैं जैसी विषयवस्तु उसी के अनुरूप कथानक का चयन इनकी विशेषता है। स्वयं कहते हैं– ''चीजें मन में घुमड़ती रहती हैं, अनुभव की आँच में पकती रहती है। संवेदना का विकास अलग–अलग मनः स्थितियों में होता है..... आप जिस विषय पर जिस घटना पर लिखना चाहें उसमें डूब जाना चाहिए।

समग्रतः इनकी साहित्यिक कृतियाँ कबीर के भाषाई अक्खड़पन और निराला के व्यंग्य वैविध्य का अनुठा संगम है। जो आम भारतीय की सामाजिक अस्मिता और अस्तित्व की सच्चाईयों के दस्तावेज हैं जिनमें आमजन की करूणा और भावनाएँ व्यक्त हैं। इनकी भाषा शैली अत्यंत्य उत्कृष्ट कलात्मक और प्रभावपूर्ण है। इनकी विचारधरा दृष्टि, संवेदना, कला तथा भाषा सभी स्तरों पर जन प्रतिबद्ध है, जिस कारण वे मानवोचित अधिकार, सम्मान और गरिमा के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक न्याय की लड़ाई लड़ते हैं और उसमें सफल भी होते हैं। इनके गद्य में व्यर्थ की भावुकता, काल्पनिकता और शब्द क्रीड़ा नहीं है। अक्षर विन्यास, पद विन्यास, भाव संयोजन, शैली सभी दृष्टियों से अपने युग के बेजोड़ विधाता रहे हैं। वे दया की याचना नहीं करते। उनकी रचनाएँ तो विविधांगी हैं जो आज भी आम से खास तक की पसंद हैं और जिनमें यांत्रिकता और बनावटीपन नहीं है। वस्तुतः हिन्दी प्रदेश के जन जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति देने वालों में नागार्जुन श्रेष्ठ हैं।

संदर्भ–

1. नागार्जुन के कथा साहित्य में कृषक जीवन डॉ0 सुनील कुमार पाण्डेय।
2. नागार्जुन का रचना संसार– विजय बहादुर सिंह।
3. गूगल : नागार्जुन की भाषा।

****